

परिकल्पना आरंभ बिन्दु प्रदान करती
 एक अच्छी परिकल्पना को
 विशेषता देत है कि उई
 प्रथम दृष्टया आरंभ बिन्दु
 को पता लगा चुके। इससे इसका
 को जानकारों मिल जाती है कि
 अध्ययन कहा से प्रारंभ किया जाया
 आरंभ एक अच्छी परिकल्पना को
 करती को नत्काल आरंभ बिन्दु प्रदान
 करता है।

(2) परिकल्पना शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है।

एक अच्छी परिकल्पना से शोधकर्ता को यह ज्ञान होना है कि किस दिशा में प्रयास करना है और किस दिशा में प्रयास नहीं करना है। इससे जून एवं समुप दोनों का अध्ययन नहीं होना है।
 (R. K. Jain, 1978) महोदय के अनुसार परिकल्पना से शोधकर्ता को वाद्य को एक निश्चित दिशा सुझा पड़ती है।

(3) परिकल्पना को जांचनीय होना चाहिए।
 जांचनीयता मनोवैज्ञानिक शोध प्राक्कल्पना को एक महत्वपूर्ण कूसीली है। परिकल्पना देसी लेनी चाहिए कि शोधकार्य में नत्काल को गुंजाकिस कम हो। साथ-ही-साथ परिकल्पना जांच सरल तथा सुगम हो जाना

इससे शीघ्र जन्म हो जायेगी जो
 या कर्मों के कारण जन्म होगा जो
 को जो-च-नीयता को मैं कहूँ (परिच्छेद,
 (वद) मनुस्मृतिका स्वयंसा प्रथम
 हीन सुदीन को मैं परिभाषित किया
 जिनके हाथों के अनुसार है एक प्रकार
 जाता है। स्वयंसा के रूप में वह कि
 मनुस्मृतिका में भी यह विचारित हुआ
 वह परिच्छेद में ही मा जन्म है जो
 वायु अर्थात् कोषाधीन जन्म निमित्त
 मा एक निमित्त किसी परिच्छेद
 को स्वयंसा ही मा किसी अर्थ में
 कर्म द्वारा अर्थान के लाया पर
 हीन मा जन्म नही, कस जन्म उस
 परिच्छेद में जो-च-नीयता का गुण
 नहीं होगा है मात्र अनिच्छित कर्म
 हीन है।

(4) परिच्छेदों को सिद्धनी होना चाहिए -

किसी वीर्य समस्या के समाधान
 के लिए को ही कर्तव्य प्रकृत परिच्छेदों
 को निर्माण किया जा सकता है। इनमें
 से उस परिच्छेद का अर्थान के लिए
 चुनाव किया जाता जिसमें कम-से-कम
 अन्तर्गत रूप से जन्म लेने की संभावना
 होगी है। वही प्रकार के परिच्छेदों के
 निराकरण परिच्छेदों की बेला हीलनी
 है। किसी भी वीर्य परिच्छेदों की ग